OPEN ACCESS

Int. J. Creative Res. Publl. *Peer-Reviewed Journal* *Volume 1 Issue 4 [Jul-Aug] 2026*

IJCRP

International Journal of Creative Research and Publications

Double Blind Peer Reviewed Journal

Research Article

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में दीप्ति खंडेलवाल: मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व और शिल्पगत विशिष्टताओं का विस्तृत अनुशीलन

रजनीश वर्मा [1*], डॉ. रश्मि चौहान [2]

[1] शोधार्थी, महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोध निर्देशिका, महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * रजनीश वर्मा

DOI: https://doi.org10.5281/zenodo.21891818

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की प्रमुख कथाकार दीप्ति खंडेलवाल के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व, सामाजिक यथार्थ तथा शिल्पगत विशिष्टताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनकी कहानियों में भारतीय मध्यवर्गीय एवं उच्च-मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक विवशताओं, पारिवारिक तनावों, दांपत्य जीवन के विघटन, स्त्री-अस्मिता, यौन-कुंठा, अकेलेपन तथा मानवीय संबंधों में उत्पन्न दूरी का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। विशेष रूप से 'क्षितिज', 'प्यार', 'वह तीसरा' और 'रीतते हुए' जैसी रचनाओं में दांपत्य संबंधों में अहं, बौद्धिकता और उपयोगितावादी दृष्टिकोण से उत्पन्न अलगाव को रेखांकित किया गया है।
अध्ययन में स्त्री की काम-चेतना, देह-विमर्श और सामाजिक नैतिकता के अंतर्द्वंद्व को भी प्रमुखता दी गई है। 'युगपुत्री', 'देह की सीता', 'हव्वा' और 'अर्थ' जैसी रचनाओं के माध्यम से स्त्री की इच्छाओं, दमन, सामाजिक मर्यादाओं तथा आत्म-अस्तित्व के संघर्ष को उद्घाटित किया गया है। साथ ही 'भूख', 'जहर', 'युद्धरत' और 'सलीब पर' जैसी कहानियों में आर्थिक अभाव, बेरोजगारी, गरीबी तथा पूंजी-केंद्रित सामाजिक व्यवस्था के कारण मानवीय मूल्यों के क्षरण को अभिव्यक्ति मिली है।
दीप्ति खंडेलवाल के कथा-साहित्य में बाह्य द्वंद्व और आंतरिक मनोद्वंद्व दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक दबावों और राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न बाह्य संघर्ष के साथ-साथ अहं, हीन भावना, त्याग, असुरक्षा और अस्तित्व-संकट से उत्पन्न आंतरिक संघर्ष भी उनके पात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।
शिल्प की दृष्टि से उनकी कहानियों में वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, व्यंग्यात्मक, पूर्वदीप्ति तथा काव्यात्मक शैलियों का प्रयोग मिलता है। उनके कथा-शीर्षक भी प्रतीकात्मक एवं अर्थपूर्ण हैं। समग्रतः दीप्ति खंडेलवाल का कथा-साहित्य स्त्री-अस्मिता, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, मध्यवर्गीय संत्रास और सामाजिक विसंगतियों का सशक्त चित्र प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ स्त्री को केवल पीड़ित या आदर्श पात्र के रूप में नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं, कमजोरियों, संघर्षों और स्वतंत्र अस्तित्व के साथ एक वास्तविक मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 3139-6313
- **Received:** 13-07-2026
- **Accepted:** 03-08-2026
- **Published:** 11-08-2026
- **IJCRP:**1(4); 2026: 99-103
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

वर्मा र, चौहान र. समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में दीप्ति खंडेलवाल: मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व और शिल्पगत विशिष्टताओं का विस्तृत अनुशीलन. Int. J. Creative Res. Publ. 2026;1(4): 99-103.

Access this Article Online

www.jcrp.in

मुख्य शब्द: दीप्ति खंडेलवाल, स्त्री-अस्मिता, स्त्री-विमर्श, देह-विमर्श, दांपत्य जीवन, मध्यवर्गीय संत्रास, सामाजिक यथार्थ

© 2026 रजनीश वर्मा, डॉ. रश्मि चौहान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

कहानी संग्रहों का विषयगत और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियाँ भारतीय मध्यवर्गीय और उच्च-मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों, आर्थिक विवशताओं और मनोवैज्ञानिक कुंठाओं का अत्यंत सूक्ष्म रेखांकन हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक रूढ़ियों पर सीधा आघात है, साथ ही यौन-कुंठा, आर्थिक बेबसी, और अकेलेपन का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है । इन कहानियों को उनके अंतर्निहित विषयों के आधार पर निम्नलिखित व्यापक श्रेणियों में विश्लेषित किया जा सकता है:

1. दाम्पत्य जीवन में 'अहम्' का प्रवेश और अलगाव

आधुनिक दांपत्य संबंधों में दरारें समकालीन जीवन का एक कटु सत्य हैं। दीप्ति जी की कहानियाँ 'क्षितिज', 'प्यार', 'वह तीसरा', और 'रीतते हुए' इस विषय पर अत्यंत गहराई से प्रहार करती हैं ।

- **'क्षितिज'** में नायिका (मनोविज्ञान की लेक्चरर) और नायक (अंग्रेजी में पीएचडी) प्रेम विवाह करने के बावजूद मनोवैज्ञानिक रूप से एक-दूसरे से मीलों दूर हैं। दोनों के मध्य 'अहम्' की एक अभेद्य दीवार है। नायिका सोचती है कि "ऐसे ठंडे संबंध को कैसे निभाया जा सकेगा जो विष बुझी सुइयों सा चुभता है" ।
- **'प्यार'** कहानी में सरोज और प्रथमेश दोनों एक ही कॉलेज में लेक्चरर हैं। विवाह की वर्षगांठ के अगले दिन सरोज चाहती है कि प्रथमेश उसके साथ घर पर समय बिताएं, परंतु 'पंक्चुअल' और अति-व्यावहारिक प्रथमेश अपने महत्वपूर्ण क्लास को छोड़ना नहीं चाहते और कॉलेज चले जाते हैं। यह छोटी सी घटना एक गहरी मनोवैज्ञानिक खाई को जन्म देती है, जहाँ सरोज सोचती है, "प्रथमेश नहीं झुकते तो मैं क्यों झुकूँ?" ।
- **'रीतते हुए'** में सुषमा और रमेश का प्रेम विवाह है। वे यह सोचकर बच्चा पैदा नहीं करना चाहते कि इससे खर्च बढ़ेंगे और उनके बीच दूरियाँ आ जाएँगी। परंतु उनकी यही गणितीय और अत्यधिक व्यावहारिक सोच उनके जीवन को 'रीता' (खाली) कर देती है, और सब कुछ होते हुए भी वे एक भयानक शून्यता का अनुभव करते हैं ।
- **'वह तीसरा'** (लघु उपन्यास) में रजिता और संदीप की एक साल की शादी केवल इसलिए टूटने के कगार पर पहुँच जाती है क्योंकि उनके बीच एक 'तीसरा' तत्व आकर खड़ा हो जाता है, और वह तीसरा कोई अन्य व्यक्ति नहीं, बल्कि उनका अपना 'अहम्' है ।

इन कहानियों से यह स्पष्ट होता है कि जब विवाह में मानवीय भावना, समर्पण और आत्मीयता का स्थान कोरी बौद्धिकता, अहंकार और उपयोगितावाद ले लेता है, तो दांपत्य जीवन एक यांत्रिक और दमघोंटू प्रक्रिया बनकर रह जाता है।

2. नारी की काम-चेतना, देह-विमर्श और नैतिकता का द्वंद्व

दीप्ति खंडेलवाल उन अग्रिम पंक्ति की महिला लेखिकाओं में से हैं जिन्होंने स्त्री की यौन इच्छाओं (Female Sexuality) और काम-संबंधी अतृप्ति को बिना किसी लाग-लपेट या अपराधबोध के साहित्य में प्रस्तुत किया । फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद के अनुसार, जब व्यक्ति की काम-भावनाओं का दमन होता है, तो वह विद्रोही या गहरे मानसिक द्वंद्व का शिकार हो जाता है ।

- **'युगपुत्री'** की नायिका मिस रचना कपूर एक आधुनिक विदेशी कंपनी में टाइपिस्ट है। घर की संपूर्ण आर्थिक जिम्मेदारी उठाते-उठाते वह विवाह की पारंपरिक संस्था से विमुख हो जाती है। अपनी महत्वाकांक्षाओं और काम-पिपासा को शांत करने के लिए वह नैतिकता की सारी हदें पार कर देती है और बॉस अमरकांत से लेकर सुधीर, फिरोज आदि के साथ शारीरिक संबंध बनाती है। "लेट अस एन्जॉय लाइफ एंड फॉरगेट द रेस्ट" (Let us enjoy life and forget the rest) उसकी जीवन की फिलॉसफी बन चुकी है। परंतु इस चरम उन्मुक्तता के बावजूद उसके भीतर एक भंवर है, एक रिक्तता है। लेखिका यहाँ दिखाती हैं कि देह की पूर्ण स्वतंत्रता भी मानसिक तृप्ति की गारंटी नहीं है ।
- **'देह की सीता'** की डॉ. शालिनी उच्च वर्ग की उस मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ अनैतिकता को भी एक 'कल्चरड एटीट्यूड' (Cultured attitude) मान लिया गया है। वह और उसका पति रंजीत एक-दूसरे के बाह्य यौन संबंधों को 'माइंड' नहीं करते और शालिनी पर-पुरुषों से संबंध बनाती है। परंतु जब एक 14 वर्षीय अशिक्षित बलात्कार-पीड़िता उसके अस्पताल में आती है और अपना सब कुछ लुट जाने की बात करती है, तो शालिनी का अवचेतन हिल उठता है। वह उस लड़की को समझाती है: "नॉनसेंस, जिंदगी देह के लिए मर जाने में नहीं, देह के लिए जीने में है" । डॉ. शालिनी के अवचेतन में दीवार पर टंगी सेक्स-सिंबल मैरिलिन मुनरो और दादी के पूजा घर में अग्निपरीक्षा देती सीता, दोनों के चित्र आपस में टकराते हैं। यह कहानी इस बात का गहरा मनोवैज्ञानिक पाठ है कि स्त्री अपनी देह से परे भी एक स्वतंत्र और पवित्र पहचान रखती है, और अंधी आधुनिकता के बीच भी भारतीय संस्कारों की जड़ें कहीं न कहीं उसे मथती रहती हैं।
- **'हव्वा'** की मिस रतिलाल बचपन में अपनी बहन के अनुभवों के कारण पुरुषों के प्रति घोर नफरत पाल लेती है। एयर इंडिया की रिसेप्शनिस्ट बनकर वह अपनी पूरी जिंदगी पुरुषों से बदला लेने के लिए दांव पर लगा देती है, परंतु अंततः कैंसर का शिकार होकर स्वयं बर्बाद हो जाती है; उसे अफसोस होता है कि वह न पत्नी बन पाई, न माँ ।
- **'अर्थ'** की कुमुद का विवाह उसकी निर्धनता के कारण उससे दोगुनी उम्र के एक सेठ से कर दिया जाता है। यौन अतृप्ति और उम्र के फासले के कारण कुमुद अपने युवा संगीत ट्यूटर शरद की ओर आकर्षित होती है। यहाँ काम-वासना की अतृप्ति स्त्री को नैतिकता की सीमाएँ लांघने पर विवश कर देती है, जिसे समाज केवल व्यभिचार मानता है, जबकि यह एक मनोवैज्ञानिक विवशता है ।

3. आर्थिक अभाव, मध्यवर्गीय संत्रास और मानवीय मूल्यों का पतन

पूंजीवादी व्यवस्था, बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी ने मध्यवर्ग की कमर तोड़ दी है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियाँ इस आर्थिक यथार्थ और उसके कारण दरकते मानवीय संबंधों को अत्यंत नग्न रूप में प्रस्तुत करती हैं ।

- **'जहर'** कहानी में हरिहर बाबू का जवान बेटा अमर तपेदिक (TB) से मर जाता है क्योंकि अर्थाभाव के कारण उसका समुचित इलाज नहीं हो पाता। बेटे की मृत्यु पर माँ छाती पीटकर जो विलाप करती है, वह स्तब्ध करने वाला है: "अरे मेरा लाख रुपये का लाल चला गया, इन दो (बेटियों) में से कोई चली जाती तो छाती पर से एक पत्थर कम होता" । यह संवाद समाज की उस कटु सच्चाई को अनावृत्त करता है जहाँ घोर गरीबी और आर्थिक

© 2026 रजनीश वर्मा, डॉ. रश्मि चौहान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

असुरक्षा के कारण मातृत्व की ममता भी जेंडर-भेदभाव करने लगती है।

- **'भूख'** कहानी निम्नवर्ग की चरम त्रासदी है। रधिया का पति बिरजू मलेरिया से मरणासन्न अवस्था में है। घर में अन्न का एक दाना शेष नहीं है। बस ड्राइवर, दूधवाला, और दुकानदार अन्न के बदले रधिया के जिस्म की कीमत मांगते हैं। अपने पति की जान बचाने के लिए रधिया मजबूरन अपने शरीर का सौदा करती है । बीमार पति जब उसे 'छिनार' कहकर दुत्कारता है, तो रधिया का मन विद्रोही हो उठता है। लेखिका यहाँ स्पष्ट करती हैं कि जब पेट की भूख सामने आती है, तो नैतिकता, शील और 'छिनार' जैसे शब्द सर्वथा अर्थहीन हो जाते हैं।
- **'युद्धरत'** का मिस्टर व्यास, जो 30 वर्ष की आयु में ही आर्थिक चिंताओं के कारण लगभग गंजा हो चुका है, रोज़ की दाल-रोटी के जुगाड़ में हर दिन एक नया युद्ध लड़ रहा है। यह उस पूरी पीढ़ी के आर्थिक अवसाद का प्रतीक है ।
- **'सलीब पर'** में बाबूजी, जिन्होंने जवानी में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की बजाय अपना परिवार पाला, बुढ़ापे में अपने ही बेटों (किशन, बिशन, विनोद) द्वारा जायदाद के हिस्से के लिए मक्कार कहे जाते हैं और अपमानित होते हैं। यह कहानी दर्शाती है कि पूंजी-केंद्रित समाज में खून के रिश्ते भी व्यावसायिक हो गए हैं ।

4. पारिवारिक संरचना में 'सास-बहू' का द्वंद्व और टूटती परंपराएं

आधुनिक शिक्षित स्त्री और पारंपरिक सास के बीच का पीढ़ीगत और वैचारिक द्वंद्व दीप्ति जी के कथा-साहित्य का एक अन्य प्रमुख विषय है ।

- **'एक और सीता'** की मधु अपने पति रविकांत के साथ रहती है, जो अपनी माँ का अंधभक्त है और उनके किसी भी कृत्य का विरोध नहीं कर सकता। जब गर्भवती मधु डॉक्टर को दिखाना चाहती है, तो सास ताना मारती है कि "बहू जी दाई को पेट नहीं दिखावेंगी... किसी डॉक्टरनी के पास जावेंगी। सैकड़ों रुपये बिगाड़ेंगी।" । पति की अंधी मातृभक्ति और पत्नी के प्रति न्याय न कर पाने की अक्षमता के कारण मधु घर छोड़ने का कठोर फैसला करती है।
- **'प्रेत'** में नीलिमा, जो बी.ए. पास है और जिसने होमसाइंस की ट्रेनिंग ली है, अपनी रूढ़िवादी सास द्वारा घर को अपने ढंग से सजाने या टेलकम पाउडर लगाने जैसी सामान्य बातों पर टोकी जाती है। सिरदर्द के कारण जन्माष्टमी के एक उत्सव में न जा पाने पर सास उसे "गलत" ठहराती है और बेटा अविनाश नीलिमा को ज़ोरदार थप्पड़ मार देता है। इस घुटन और अपमान से नीलिमा का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और उसे दौरे पड़ने लगते हैं ।
- **'एक अदद औरत'** की सीता जब अपनी सास के तानों से तंग आ जाती है, तो वह पलटकर प्रतिवाद करती है: "क्यों मांजी, बेटियाँ ही बेटे जनती हैं या बेटे आकाश से टपकते हैं?" ।

इन कथाओं से यह मनोवैज्ञानिक तथ्य पुष्ट होता है कि पितृसत्ता केवल पुरुषों द्वारा ही नहीं चलाई जाती, बल्कि पुरानी पीढ़ी की स्त्रियाँ (सास) भी इस व्यवस्था की सबसे मजबूत वाहक होती हैं, जो नई पीढ़ी की स्त्रियों को प्रताड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़तीं ।

अंतर्द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक यथार्थ (Psychology of Inner Conflict)

मानव जीवन में जब उसकी इच्छाओं, आकांक्षाओं और बाहरी सामाजिक-नैतिक बंधनों के बीच टकराहट होती है, तो 'द्वंद्व' (Conflict) उत्पन्न होता है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में यह द्वंद्व अत्यंत मुखर रूप में दृष्टिगोचर होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, आंतरिक इच्छाओं की प्रतिकूलता में संवेगात्मक तनाव से उत्पन्न विरोधी स्थिति ही द्वंद्व है । लेखिका ने इसे दो मुख्य श्रेणियों में विश्लेषित किया है: बाह्य द्वंद्व और मनोद्वंद्व ।

1. बाह्य द्वंद्व (External Conflict)

बाह्य द्वंद्व वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति का सीधा टकराव समाज, परिवार, अर्थव्यस्था या राजनीति से होता है।

- **सामाजिक द्वंद्व**: समाज की सड़ी-गली परंपराओं के विरुद्ध संघर्ष। 'बेहया' की चंदा समाज द्वारा वेश्या कहे जाने और थूके जाने पर भी टूटती नहीं है, वह उस गंदे माहौल में रहना सीख गई है। समाज का पाखंड उसके लिए अब अर्थहीन है । 'चंदा की जोत' में भागवती अपने शराबी पति और लोलुप समाज के बीच पिसने की बजाय अपनी बेटी के साथ आत्महत्या करना श्रेयस्कर समझती है ।
- **अस्तित्व संबंधी द्वंद्व (Existential Conflict)**: 'निर्बंध' की अनिता (पोती) अपनी नानी (जो पति की बेवफाई सहती है) और माँ (जो पति से विद्रोह कर अलग रहती है) के शोषित जीवन को देखकर किसी भी विवाह बंधन में नहीं बंधना चाहती। वह स्वयं को 'ए परफेक्ट मॉड' बनाना चाहती है । यह पीढ़ीगत बदलाव स्त्री के अपने स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास है ।
- **राजनैतिक द्वंद्व**: 'अनारकली' कहानी में क्षिप्रा मुखर्जी और सुब्रत मजूमदार, जो कभी कॉलेज के दिनों में सलीम-अनारकली का अभिनय करते हुए एक-दूसरे से प्रेम करते थे, बीस साल बाद राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी (कांग्रेस बनाम कम्युनिस्ट) बनकर आमने-सामने हैं। सत्ता और पद की लोलुपता ने उनके मानवीय प्रेम को इस कदर कुचल दिया है कि क्षिप्रा अपने पूर्व प्रेमी को गुंडों से पिटवाने का विचार भी कर लेती है ।

2. मनोद्वंद्व (Internal / Psychological Conflict)

मनोद्वंद्व वह अवस्था है जहाँ युद्ध व्यक्ति के अपने भीतर, उसकी अपनी ही विरोधी भावनाओं के बीच लड़ा जाता है।

- **वैयक्तिक द्वंद्व (Individual Ego Conflict)**: 'अभिशप्ता' की 'मानो दी' अपने परिवार (पिता का लकवा, तीन बहनों की शादी का खर्च) का बोझ उठाते-उठाते अपनी स्वयं की शादी और अपने प्रेमी (प्रशांत) को भूलने पर विवश है। वह एक इंजीनियर का रिश्ता अपनी बहन के लिए त्याग देती है और 'त्याग की मूरत' बन जाती है, किंतु अवचेतन के स्तर पर वह एक असीम घुटन और एकाकीपन में छटपटाती है। वह सोचती है कि उसके भाग्य में केवल धूप ही धूप है, सुखद चाँदनी नहीं ।
- **हीन भावना के कारण द्वंद्व (Inferiority Complex)**: 'अस्वीकार' कहानी में डॉ. सोमेश अपनी अत्यंत सुंदर पत्नी माधवी के सम्मुख स्वयं को हीन महसूस करते हैं। इस हीन भावना के कारण वे माधवी को मानसिक रूप से कभी स्वीकार नहीं कर पाते। माधवी पति के इस अस्वीकार से घुटकर संगीत का सहारा लेती है,

© 2026 रजनीश वर्मा, डॉ. रश्मि चौहान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परंतु पति-पत्नी के बीच एक स्थायी तटस्थता बनी रहती है। 'नाटक' कहानी की नायिका घुटनों के दर्द के कारण अपाहिज हो गई है। उसका पति उसकी पूर्ण निष्ठा से सेवा करता है, परंतु नायिका के भीतर पनपी हीन भावना उसे यह सोचने पर विवश कर देती है कि पति प्रेम नहीं कर रहा, बल्कि केवल कर्तव्य का 'नाटक' कर रहा है।

कथात्मक संरचना और शिल्पगत विशिष्टता (Narrative Structure and Style)

दीप्ति खंडेलवाल केवल विषयवस्तु के स्तर पर ही नहीं, बल्कि शिल्प (Craft) और भाषा के स्तर पर भी अत्यंत समृद्ध और सचेत कहानीकार हैं। उनकी भाषा में युगानुरूपता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता और बौद्धिकता का अद्भुत समन्वय है। उनके साहित्य में प्रयुक्त प्रमुख शैलियाँ निम्नलिखित हैं, जिन्हें तालिका और विवरण के माध्यम से समझा जा सकता है:

प्रयुक्त शैली (Style)	विशेषताएँ और प्रभाव	प्रमुख कहानियों में उदाहरण
वर्णनात्मक (Descriptive)	प्रवाहात्मकता और गतिशीलता; सूक्ष्म दृश्यों का यथार्थ चित्रण।	'मूल्य', 'युद्धरत', 'जहर'
संवादात्मक (Dialogic)	छोटे, चुस्त और धारदार संवाद; चरित्रों के मानसिक तनाव का प्रकटीकरण।	'देह से परे', 'एक और सीता'
आत्मकथात्मक (First-Person)	पाठकों के साथ सीधा तादात्म्य; 'मैं' शैली में आत्मीय और दार्शनिक अभिव्यक्ति।	'मासूम', 'जमीन', 'शीर्षकहीन'
व्यंग्यात्मक (Satirical)	सामाजिक विद्रूपताओं और खोखले नैतिक मूल्यों पर करारा प्रहार।	'परिणति', 'आधुनिक', 'कटु सत्य'
पूर्वदीप्ति (Flashback)	अतीत की स्मृतियों के माध्यम से वर्तमान की मानसिक स्थिति का विश्लेषण।	'अभिशप्ता', 'प्रिया' (उपन्यास)
काव्यात्मक (Poetic)	गद्य में लयात्मकता और कोमल भावनाओं का अत्यंत कलात्मक प्रकटीकरण।	'अर्थ', 'ये भी कोई गीत है'

शैलीगत उदाहरण और विश्लेषण

- **वर्णनात्मक शैली**: 'मूल्य' कहानी में सुबह के दृश्य का चित्रण—आँगन में पड़े जूठे बर्तनों पर कौवों की काँव-काँव, चिड़चिड़ाती भगवती का बर्तन मांजना—एक गरीब मध्यवर्गीय परिवार की रोज़मर्रा की यांत्रिक और उबाऊ दिनचर्या को अत्यंत मूर्त रूप देता है।
- **संवादात्मक शैली**: 'देह से परे' कहानी में पति-पत्नी के मध्य संवाद उनकी मानसिक दूरियों को पूरी स्पष्टता से उकेरता है:

पत्नी: "तुम बदल गए हो।" पति: "बदलना समय का नियम है।" यह संक्षिप्त और रूखा संवाद ही टूटते दांपत्य की पूरी त्रासदी को समेट लेता है।

- **आत्मकथात्मक शैली**: 'मासूम' कहानी में नायिका ट्रेन में सफर करते हुए दार्शनिक हो उठती है: "यह ट्रेन का सफर मुझे अक्सर गंभीर बना जाता है, लगता है यह जिंदगी भी तो एक सफर है"। 'वह तीसरा' लघु उपन्यास में रजिता की आत्मकथात्मक सोच उसके अहम् के विषधरों को स्पष्ट करती है।
- **व्यंग्यात्मक शैली**: 'परिणति' कहानी में नायक महेंद्र का यह कथन—"आजकल तो मौत मिल सकती है, नौकरी नहीं मिलती"—शिक्षित बेरोजगारी की भयावहता पर एक करारा व्यंग्य है। 'आधुनिक' कहानी में विलायत से पढ़कर आया सुधीर अपने ही पिता (चौधरी हरभजन) को अपनी विदेशी मेम के सामने "ए जस्ट ओल्ड सर्वेंट" (A just old servant) कहकर पेश करता है। यह नई पीढ़ी के खोखलेपन पर गहरा कटाक्ष है।
- **काव्यात्मक शैली**: मूल रूप से एक कवयित्री होने के कारण दीप्ति खंडेलवाल के गद्य में काव्यात्मक लयात्मकता का सहज प्रवेश हुआ है। 'ये भी कोई गीत है' में वे लिखती हैं: "आओ एक चुम्बन हम दूरियाँ समेट लें, बाहों के बंधन में आसमान भेंट लें"। यह भाषा की तरलता और भावों की गहनता का परिचायक है।

शीर्षकों की सार्थकता और प्रतीकात्मकता

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों के शीर्षक अत्यंत प्रतीकात्मक, विषयानुकूल और अर्थपूर्ण होते हैं। 'युद्धरत' (जीवन संघर्ष का प्रतीक), 'विषपायी' (अपमान के घूंट पीने वाला), 'हव्वा' (पुरुषों का शिकार करने वाली), और 'कोई जमीन नहीं' (आधारहीनता का प्रतीक) जैसे शीर्षक अपने आप में कहानी के संपूर्ण दर्शन को समेटे हुए हैं। जब उन्हें लगता है कि मध्यवर्ग की पीड़ा इतनी आम हो गई है कि उसका कोई विशिष्ट नाम नहीं हो सकता, तो वे कहानी का नाम ही 'शीर्षकहीन' रख देती हैं, जो उनकी रचनात्मक बौद्धिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

5. निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में दीप्ति खंडेलवाल का समग्र योगदान और प्रासंगिकता

दीप्ति खंडेलवाल का कथा-साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और मध्यवर्गीय संत्रास का एक अप्रतिम और विस्तृत कैनवास है। एक ऐसी लेखिका, जिसकी अपनी देह ही उसका 'वाटरलू' (Waterloo) बन गई थी, जिसने जीवन पर्यंत शारीरिक पीड़ा के तीन हजार से अधिक इंजेक्शन झेले, उसने अपनी रचनाओं में जीवन की अदम्य जिजीविषा (Will to live) और विद्रोह का अद्वितीय संचार किया।

उनके साहित्य के संपूर्ण और गहन विश्लेषण से निम्नलिखित तथ्य स्थापित होते हैं:

1. **स्त्री-अस्मिता का नवनिर्माण**: दीप्ति जी ने पारंपरिक भारतीय नारी की उस मिथकीय छवि—जो चुपचाप सब कुछ सह लेती थी और जिसे महिमामंडित किया जाता था—को पूरी तरह ध्वस्त किया है। उनके पात्र (चाहे वह 'कोहरे' की स्मिता हो, 'प्रिया' की सौदामिनी हो, या 'देह की सीता' की डॉ. शालिनी) पुरुष की सत्ता को सीधी चुनौती देते हैं। वे विवाह के भीतर अपने स्वत्व (Self) को खोने और शोषित होने के बजाय अलगाव या एकाकीपन का चुनाव करने का अदम्य साहस रखती हैं।
2. **देह-विमर्श और नैतिकता के नए प्रतिमान**: उन्होंने यौनिकता (Sexuality) और काम-अतृप्ति को स्त्री के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से देखा, जिसे पहले साहित्य में वर्जित माना जाता था। 'युगपुत्री', 'अर्थ' और 'हव्वा' जैसी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्री की देह पर केवल पुरुष का अधिकार नहीं है, और उसकी काम-चेतना का दमन उसे विद्रोही बनाता है। साथ ही, उन्होंने यह भी दर्शाया कि अंधी शारीरिक उन्मुक्तता भी मानसिक शांति की गारंटी नहीं है।

© 2026 रजनीश वर्मा, डॉ. रश्मि चौहान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. **मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों (Psychological Complexes) का सूक्ष्म अंकन**: उनकी कहानियाँ मानव मन, विशेषकर स्त्री मन की 'कंडीशनिंग' का समाजशास्त्रीय अध्ययन हैं। अहम् (Ego), हीन भावना, और आर्थिक असुरक्षा किस प्रकार पारिवारिक संबंधों (दांपत्य, सास-बहू, माँ-बेटे) को खोखला कर रहे हैं, इसका उन्होंने अत्यंत निर्मम और यथार्थवादी चित्रण किया है।
4. **पूंजीवादी व्यवस्था पर प्रहार**: 'भूख', 'जहर', 'युद्धरत' जैसी कहानियाँ केवल स्त्री की नहीं, बल्कि संपूर्ण शोषित वर्ग की गाथा हैं। ये रचनाएँ दिखाती हैं कि पूंजीवाद ने मनुष्य को उसकी आधारभूत गरिमा से वंचित कर दिया है, जहाँ रोटी के लिए देह बेचना पड़ता है या बेटे-बेटियों की मृत्यु में भी 'फायदे-नुकसान' का गणित लगाना युग का 'कड़वा सच' बन गया है।

अंततः, दीप्ति खंडेलवाल का लेखन 'कला कला के लिए' नहीं, बल्कि 'कला जीवन के लिए' के सिद्धांत पर आधारित है। उनकी लेखनी से उकेरी गई स्त्रियाँ आदर्श की वेदी पर चढ़ने वाली मिथकीय देवियाँ नहीं हैं, बल्कि हाड़-मांस की वे वास्तविक स्त्रियाँ हैं जो अपनी कामुकता, अपनी कमजोरियों, अपने अहम् और अपनी पीड़ाओं के साथ इस समाज में जीती हैं और संघर्ष करती हैं। 1970 से 1985 के अल्प परंतु अत्यंत प्रखर सृजनकाल में उन्होंने हिंदी साहित्य को जो वैचारिक गहराई और मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की, वह उन्हें समकालीन कथाकारों में एक अद्वितीय और अमर स्थान दिलाती है। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों के मन में एक जलती हुई शलाका (दीप्तशलाका) के समान जीवित हैं, जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का मार्ग निरंतर प्रशस्त करती हैं।

संदर्भ सूची

1. नागरमोजे अ. राष्ट्रवाणी द्वैमासिक. 2010.
2. सिंह प्रे, खिल्लन. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज.
3. खंडेलवाल दी. सलीब पर: आत्मरचना. 1977.
4. खंडेलवाल दी. दो पल की छांह. 1978.
5. खंडेलवाल दी. कड़वे सच. पराग प्रकाशन; 1975.
6. खंडेलवाल दी. नारी मन. 1979.
7. खंडेलवाल दी. प्रिया. 1978.
8. खंडेलवाल दी. कोहरे. 1977.
9. खंडेलवाल दी. वह तीसरा. 1976.
10. खंडेलवाल दी. धूप के अहसास. 1976.
11. मैकाइवर आरएम, पेज सीएचए. समाज. विश्वेश्वरय्या जी, अनुवादक.
12. जॉन्सन एचएम. समाजशास्त्र: एक विधिवत विवेचन.
13. उपाध्याय दे. कथा साहित्य: मेरी मान्यताएं.
14. मेहरोत्रा सु. हिन्दी कहानियों में द्वन्द्व.
15. गुप्ता म. हिन्दी उपन्यास: समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the author

रजनीश वर्मा महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत में शोधार्थी हैं। उनका अकादमिक कार्य शोध एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र से संबंधित है। वे अपने शोध के माध्यम से विषयगत ज्ञान के विस्तार और अकादमिक अध्ययन में योगदान देने के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत हैं तथा अनुसंधान संबंधी गतिविधियों में संलग्न हैं।

डॉ. रश्मि चौहान महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत में शोध निर्देशिका हैं। वे शोध मार्गदर्शन, अकादमिक अनुसंधान और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। अपने अनुभव एवं शैक्षणिक विशेषज्ञता के माध्यम से वे शोधार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती हैं तथा अकादमिक ज्ञान और शोध संस्कृति के विकास में योगदान देती हैं।

© 2026 रजनीश वर्मा, डॉ. रश्मि चौहान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/